Educational Psychology

Paper III

B.A. II (Hons.)

निबंधात्मक (लेख) परीक्षा के गुणों एवं दोषों की व्याख्या करें।

(Explain the merits and demerits of essay-type of examination)

निबंधात्मक परीक्षा काफी पुरानी और एक महत्वपूर्ण प्रणाली है। इस परीक्षा को निबंधात्मक परिक्षण (essay test) भी कहा जाता है। परीक्षा की यह प्रणाली पहले भी प्रचलित थी और आज भी इसका उपयोग व्यापक रूप से होता है। निबंधात्मक परीक्षा में teacher curriculum के अनुसार पांच से दस प्रश्नों को चुनते हैं। शिक्षक की यह कोशिश रहती है की प्रश्नों का चयन इस ढंग से किया जाये की पाठ्यक्रम के सभी अंश सम्मिलित किये जाएँ। छात्रों को उन प्रश्नों में किन्ही तीन या पांच (कभी कभी छः प्रश्नों का भी) प्रश्नों का उत्तर एक निर्धारित समय (प्रायः तीन से चार घंटे) में देना होता है। इस तरह की परीक्षा का मुख्य पहलू यह है कि प्रश्नों का उत्तर छात्र अपनी भाषा में कई paragraphs या outline के रूप में देते हैं।

Skinner (1962) के अनुसार "निबंधात्मक परीक्षा में सामान्यतः पांच से दस प्रश्न होते हैं, जिसमे शिक्षक एक व्याख्या या वर्णन कि उम्मीद करते हैं। छात्रों को अपने विचार paragraph में या कभी-कभी सारांश (summary) के रूप में संगठित करने के लिए कहा जाता है।"

निबंधात्मक परीक्षा में शिक्षक वर्णात्मक (descriptive) तथा विवेचनात्मक (explanatory) दोनों ही तरह के प्रश्न पूछते हैं। लिखे गए उत्तरों का गुणात्मक मूल्यांकन (qualitative evaluation) कर के शिक्षक प्रति उत्तर कुछ अंक देते हैं जिन्हें जोड़ कर परीक्षा में छात्र के सफल या असफल होने की घोषणा की जाती है।

निबंधात्मक परीक्षा के कुछ गुण जो निम्नलिखित हैं-

1) सरलता (Simplicity) - निबंधात्मक परीक्षा का सबसे प्रमुख गुण उसकी सरलता है। इसके संचालन में शिक्षकों या अधिकारीयों को अधिक कठिनाई नहीं होती है। शिक्षक आसानी से पांच से दस प्रश्नों का निर्माण curriculum के अनुकूल कर लेते हैं जिसके आधार पर वे छात्रों की skill एवं ज्ञानोपार्जन की माप कर लेते हैं।

2)विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता (Freedom to express thought) - निबंधात्मक परीक्षा के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर छात्र को अपनी भाषा में अपने ढंग से व्यवस्थित कर उन्हें अपने विचार व्यक्त करने की पूर्ण स्वतंत्रता होती है।

3) व्यापकता (Extensiveness) - निबंधात्मक परीक्षा में प्रश्न पूरे curriculum से पुछा जाता है। इससे छात्रों को एक ओर पुरे curriculum का तो ज्ञान होता ही है, दूसरी ओर उनकी विवेक (reasoning) की क्षमता में भी वृद्धि होती है।

4) संगठनात्मक क्षमता में वृद्धि (Increase in organisational ability) - निबंधात्मक परीक्षा में छात्रों को वर्णात्मक तथा विवेचनात्मक दोनों ढंग के प्रश्नों का उत्तर छात्रों को अपने विचारों एवं चिंतन को सुसंगठित ढंग से उपस्थित कर के इतनी बारीकी से देना होता है कि कहीं से भी किसी प्रकार कि कमी नहीं झलके। इस तरह छात्रों के भरपूर प्रयास से उनकी संगठनात्मक क्षमता में काफी वृद्धि हो जाती है।

5) मूल चिंतन या रचनात्मक चिंतन में वृद्धि (Increase in original thinking or creative thinking) - निबंधात्मक परीक्षा में कुछ ऐसे प्रश्न होते हैं जिनके उत्तर के बारे में छात्र पहले से किसी ढंग कि तैयारी नहीं कर पाते। उन्हें उनका उत्तर लिखते ही समय मूल चिंतन कर के तथा अपनी बुद्धि के आधार पर प्रश्न का उत्तर तैयार करना होता है। इससे छात्रों की मूल चिंतन क्षमता में वृद्धि होती है।

6) भाषा छमता का मूल्यांकन (Evaluation of language ability) - इस ढंग की परीक्षा में छात्रों की भाषा क्षमता (language ability) का भी पता चल जाता है। छात्र किसी विषय पर अपने आप को लिखित भाषा के रूप में किस ढंग से अभिव्यक्त (express) कर सकते हैं, इसकी भी जांच निबंधात्मक परीक्षा से हो जाती है।

उपर्युक्त गुणों के बावजूद भी इस निबंधात्मक परीक्षा में कुछ कमियां पायी जाती हैं। सच्ची बात यह है की अवगुणों की तुलना में इसके गुण नगण्य हैं।

वस्तुतः इसमें कई अवगुण (demerits) पाए जाते हैं जो निम्नलिखित हैं-

1) अवैज्ञानिक मूल्यांकन (Unscientific marking) - निबंधात्मक परीक्षा का सबसे बड़ा दोष यह बताया गया है कि इसकी उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन का आधार unscientific होता है। ऐसा अक्सर देखा गया है कि एक ही उत्तर पर विभिन्न शिक्षकों द्वारा अलग अलग अंक दिए जाते हैं। इसके चार कारण मनोवैज्ञानिकों द्वारा बताये गए हैं-

क) शिक्षक की मनोदशा (mood of the teacher),

ख) समय की कमी (lack of time),

ग) परीक्षक या शिक्षक की पूर्वनिश्चित धारणा (prefixed conception of teacher or examiner),

घ) परीक्षक का व्यक्तिगत दृष्टिकोण (personal viewpoint of the examiner) ।

2) प्रश्नों का अस्पष्ट अर्थ (Vague meaning of the questions) - अक्सर देखा गया है कि इस तरह की परीक्षा के कुछ प्रश्न ऐसे होते हैं जिनका अर्थ अस्पष्ट एवं संदिघ्द होता है। इसका नतीजा यह होता है कि छात्र समुचित ज्ञान होने की बावजूद प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाते।

3) समय एवं श्रम का अधिक व्यय (Time and labour consuming) - निबंधात्मक परीक्षा कि तैयारी में छात्रों को समय एवं श्रम दोनों अत्याधिक लगता है जिससे छात्रों के स्वस्थ पर काफी बुरा असर पड़ता है।

4) रट कर याद करने पर बल (Emphasis on rote memory) - निबंधात्मक परीक्षा में प्रश्न पाठ्यक्रम से पूछे जाते हैं इस लिए जिस अंश को नहीं समझ पाते, वे उसे याद कर लेने कि कोशिश करते हैं। जिससे छात्रों में रट कर याद करने की प्रवृति को बढ़वा मिलता है।

5) अनुमान लगा कर पढ़ने की प्रवृति को बढ़ावा (Encouragement in the tendency to guess and read) - निबंधात्मक परीक्षा में क्यूंकि प्रश्न whole curriculum से पुछा जाता है और छात्र अक्सर समग्र पाठ्यक्रम को न पढ़ कर अपने अनुभव तथा पिछले कई सालों में पूछे गए प्रश्नों के स्वरुप को ध्यान में रखते हुए अनुमान लगा कर उसी को पढ़ते हैं और बाकी अंशों को चोर देते हैं। जिससे छात्रों का ज्ञान अधूरा रह जाता हैं और छात्रों को अनुमान लगा कर परीक्षा की तैयारी करने की बुरी आदत पड़ जाती हैं।

6) सीमित विस्तार (Limited coverage) - निबंधात्मक परीक्षा में शिक्षक को प्रायः दस या बारह प्रश्न ही देने होते हैं। दूसरी ओर, इन्ही प्रश्नों के माध्यम से उन्हें समग्र पाठ्यक्रम को सम्मिलित करना पड़ता हैं। ऐसा करने में शिक्षक सच मुच पाठ्यक्रम के सभी अंशों को चाह कर भी सम्मिलित नहीं कर पाते। अतः इस ढंग की परीक्षा का विस्तार अपने आप ही सीमित हो कर रह जाता हैं।

7) निबंधात्मक परीक्षा में अक्सर यह देखा गया हैं की छात्रों को जब प्रश्न का उत्तर स्पष्ट रूप से नहीं आता हैं तो वह उत्तर के रूप में उल्टा सीधा एवं असंगत तथ्यों को आकर्षक एवं मंनोहक भाषा में लपेट कर लिख देते हैं। इससे परीक्षक कभी कभी धोखा खा कर उन्हें अच्छा अंक भी प्रदान कर देते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि निबंधात्मक परीक्षा में कई प्रकार कि त्रुटियाँ हैं, जिनके कारण इस परीक्षा से विद्यार्थियों की वास्तविक योग्यता का मापन संभव नहीं होता हैं। फिर भी यदि इन त्रुटियों को दूर करने के लिए ठोस कदम उठाया जाये तो इस परीक्षा-प्रणाली से हम बहुत हद तक लाभान्वित हो सकते हैं। अनेक त्रुटियों के बावजूद आज भी छात्रों की योग्यता मापने हेतु लेख परीक्षा ही लोकप्रिय एवं प्रचलित विधि के रूप में स्वीकार की जाती हैं।

Dr. Hena Hussain

Asst. Professor

Department of Psychology

Oriental College, Patna City